Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 10 | OCTOBER 2023

शिक्षित नारी देश का भविष्य : साहित्य के संदर्भ में अध्ययन

डॉ. शकुंतला देवी राणा [1]

[1] सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, हरौली, हिमाचल प्रदेश

ABSTRACT:

हमारे देश में स्त्रियों को देवी और शक्ति माना गया है और इसी देश में स्त्रियों की दशा बहुत खराब भी रही है। 'देवी' के पद से गिरकर 'वस्तु' के दर्जे तक स्त्री ने सब कुछ देखा है। जब भी समाज पर ज्यादा संकट आता है तो सबसे ज्यादा मार स्त्री पर पड़ती रही है। 21वीं सदी में स्त्री ने अपनी आजादी की एक नई करवट ली है। आज भी हम पाते हैं कि स्त्री घर परिवार समाज में काम करती भी दिखती है और दफ्तरों और प्रशासनिक कार्यों को भी बखूबी अंजाम दे रही है। वह कहीं परिवार के सदस्यों के साथ प्रेम की अधिकारणी बनी है तो कहीं घरेलू या यौन हिंसा का शिकार भी हुई है। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं चाहे स्त्री नहीं पहुंची है। इसके बावजूद भी स्त्री के सामने अनेक बाधाएं आज भी हैं। किसी भी समाज की प्रगति का अनुमान वहां की स्त्रियों की स्थिति से ही लगाया जा सकता है। स्त्री सशक्तीकरण को केवल एक नारे के रूप में नहीं देखा जा सकता। सही रूप में स्त्री सशक्तीकरण क्या हो सकता है, इसके लिए स्त्री सभी बंधनों से मुक्ति स्त्री सशक्तीकरण नहीं है। स्त्री सशक्तीकरण का अर्थ है स्त्री का पूर्ण शिक्षित होना। यदि स्त्री शिक्षित होगी और उच्च शिक्षित होगी, तभी वह सभी समस्याओं से निपट सकती है। निपट ही नहीं बल्कि जो स्त्रियां शोषित हो रही है उनको भी उबार सकती है। हिंदी साहित्य में भी स्त्री के शोषण को हिंदी लेखिकाओं ने चित्रित किया है। शोषण से मुक्ति की एक ही राह गुजरती है, वह शिक्षा ही है। शिक्षा के द्वारा ही स्त्री समाज में अपना स्थान कायम कर सकती है। बाजारवाद-उपभोक्तावाद उसको जिस मुक्ति की ओर ले जाना चाहते हैं, वह वास्तविक मुक्ति नहीं है। वास्तविक मुक्ति उसे शिक्षा के द्वारा जिम्मेदार बनने पर ही मिल सकती है।

KEYWORDS:

सामाजिक दशा, आजीविका, नारियां, अस्मिता, आत्मनिर्भर, भूमंडलीकरण, अवधारणा, परिवार, उपभोक्ता, मीडिया, मोटरसाइकिल, बाजारवाद, परंपरा, कामकाजी, हिंदी साहित्य, परिस्थितियां, बदौलत, अज्ञानता, पुरुषसत्तात्मक, अनुशासन, समाजशास्त्र, महाभारत, पिंजरा, आसमान, आत्मबल, कवयित्री, वजूद, अत्याचार, उच्च शिक्षा, समाज।

किसी देश की सामाजिक दशा का अनुमान उस देश की नारियों की स्थिति से लगाया जा सकता है। नारी समाज का महत्त्वपूर्ण अंग है और कोई भी समाज नारी जाति के सहयोग के बिना प्रगति नहीं कर सकता है। परंतु विडंबना की बात है कि नारी की स्वतंत्रता की बात एक नारे से बढ़कर नहीं है सच यह है कि आज भी स्त्री की निजी सोच स्थापित नहीं हो पाई है। वह अपनी स्थिति, अपने परिवेश, अपने समाज के प्रति अपनी दृष्टि से विचार नहीं कर पाती।

20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में वैश्वीकरण और उत्तर-आधुनिकता के फलस्वरुप पूरे विश्व में हाशिए का समाज केंद्र में आने लगा। परिधि पर स्थित उपेक्षित जन केंद्र की ओर अग्रसर होकर राजनीति, साहित्य और कला क्षेत्र में अपनी पहचान बनाने लगा। स्त्री विमर्श के चलते स्त्री सशक्तीकरण का नारा लगाया गया है। स्त्री स्वयं लिखने लगी तथा उन अनछुए पहलुओं को सामने लाने लगी, जो अब तक पुरुष सत्तात्मक समाज के कारण दबे पड़े थे। इस कारण एक परिवर्तन समाज में दिखाई देने लगा है।

आज भारतीय नारी अपनी पहचान बना रही है, आत्मनिर्भर हो रही है. इसके पीछे शिक्षा और आजीविका है। उच्च शिक्षा ने नारी के लिए विकास के द्वार खोल दिये हैं। इसी कारण नारी पुरुषों से आगे बढ़ती नजर आ रही हैं शिक्षण संस्थाओं, विश्वविद्यालयों में नारियाँ शिक्षक हैं। अस्पतालों में नारियाँ डॉक्टर हैं, सरकारी दफ्तरों में नारियों क्लर्क हैं, नारियां प्रशासनिक अधिकारी हैं। कानून और पुलिस व्यवस्था में नारियां ऊँचे पदों पर हैं। "आज कुछ कार्य ऐसे भी हैं जो केवल नारियों के लिए ही उचित समझे जाने लगे हैं। यथा-टेलिफोन एक्सचेंज और रिसेप्शनिष्ट का कार्य वीरता और साहस के जो कार्य केवल पुरुषों के एकाधिकार समझे जाते थे, आज उन पर भी नारियों की दृष्टि पड़ने लगी हैं। आज नारी की इस प्रगति के मूल में सबसे बड़ा कारण है, उसको प्राप्त हुई उच्च शिक्षा।"[1]

19वीं सदी में शुरू हुए समाज सुधार आन्दोलनों के कारण स्त्री अस्मिता और स्त्री शिक्षा को महत्त्व मिला। सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में स्त्रियाँ अधिकारहीन थी। पुरुषों का सर्वत्र वर्चस्व था। इस पुरुष वर्चस्व को चुनौती देने के लिए स्त्री के आत्मनिर्भर होने की जरूरत थी, जो शिक्षा के बिना पूरी नहीं हो सकती थी। स्त्री शिक्षा आधुनिक काल में तीन चरणों में आगे बढ़ी है। पहला चरण 19वीं सदी से स्वतंत्रता प्राप्ति तक, दूसरा चरण स्वतंत्रता के बाद 20वीं सदी के नौवें दशक तक एवं तीसरा चरण भूमंडलीकरण से वर्तमान काल तक विभाजित है।

पहले चरण में राजाराम मोहनराय, ज्योतिबा फुले, सावित्री बाई फुले, पंडिता रमाबाई, केशवचन्द्र सेन आदि ने स्त्री शिक्षा को प्रारम्भ किया। दूसरे चरण में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत सरकार एवं महिला संगठनों ने शिक्षा की ज्योत जलाई। इस युग में स्त्री रोजगार की ओर उन्मुख हुई। राधा कुमार के अनुसार-

"अब उसे स्त्री की मातृ छवि में पेश करने के बजाय उसे पुत्री और कामकाजी महिला के रूप में पेश किया जाने लगा।"[2]

तीसरा चरण भूमंडलीकरण की अवधारणा से प्रारम्भ होता है। इस समय उच्च शिक्षा ने नारी के विचारों को बहुत हद तक प्रभावित किया। उच्च शिक्षा और पश्चिमी देशों में हो रहे स्त्री चिंतन ने भारतीय स्त्रियों को उत्तर आधुनिक युग में पहुँचा दिया है। "वर्तमान स्त्री चिंतन, जिसे तीसरी लहर या उत्तर स्त्रीवाद का चरण कहा जा रहा है, कई परम्परागत सिद्धान्तों पर प्रश्न उठाता है। यह स्त्री की पीड़ित छवि के बजाय उसे बदलकर सबल और सक्षम स्त्री के रूप में देखता है।"[3]

नारी का उच्च शिक्षित होना आवश्यक है। बच्चे माताओं के सम्पर्क में अधिक रहते हैं। माता के संस्कारों, व्यवहारों और शिक्षा का प्रभाव बच्चों पर होता है, इसलिए नारी का केवल साक्षर होना ही नहीं, उच्च शिक्षित होना जरूरी है। उच्च शिक्षित माताएँ ही अपने बच्चों में वे संस्कार बो सकती हैं जो देश, समाज और राष्ट्र के लिए आवश्यक होते हैं। आज की नारी का कार्य केवल बच्चे जनना, उनका पालन-पोषण करना ही नहीं, पूरे परिवार की व्यवस्था व संचालन का कार्य करना भी उसका दायित्व है। एक शिक्षित और विकसित मन मस्तिष्क वाली नारी पूरे परिवार की देखभाल के साथ आर्थिक उपार्जन भी कर सकती है।

उच्च शिक्षित होने के बावजूद आज की नारी के सामने कई समस्याएँ आ रही है। कई प्रभावों के भीतरी और बाहरी दबाव उसके व्यक्तित्व को दबा रहे हैं। समाज उसे मात्र भोग्या एवं उपभोक्ता सामग्री बनाये रखना चाहता है। नारी स्वतंत्रता के नाम पर पुरुष वर्ग उसे नुमाइश की वस्तु के रूप में पेश कर रहा है। उच्च शिक्षा प्राप्त नारी भी स्वतंत्रता के नाम पर खुद भी प्रदर्शन की वस्तु बनने में संकोच नहीं कर रही है। बाजारवाद के प्रभावस्वरूप जो नारी रूढ़ियों परंपराओं और सामाजिक बंधनों से स्वतंत्र हुई, उसे अधिक स्वतंत्रता, प्रगति का लोभ दिखाकर बाजारवाद और उपभोक्तावाद ने फिर गिरफ्त में लेना शुरू किया है। यह 'स्त्री विमर्श' की आड़ में 'स्त्री वस्तुकरण' चल पड़ा है-

लड़की तेरे बाल मुलायम है / और मुलायम बना / लड़की तेरी त्वचा कोमल है / और कोमल बना / लड़की, तू सुंदर है और सुंदर दिख/ नित नई चीज बनाई जा रही है तेरे लिए/ तेरे

लिए ही तो दुनिया सजाई जा रही है / तू है कि रोये जा रही है।"[4]

यह कडवा सच है कि "मीडिया की सहायता से स्त्री अपनी देह के हर हिस्से का, अंग-प्रत्यंग का प्रदर्शन करती है। गाड़ी, फ्रिज, शैम्पू साबुन, क्रीम-पॉडर, टायर, पान पराग, मसाले, कपड़े, जूते, ट्रक, मोटरसाइकिल, लोहा-लक्कड़ तक सभी को बेचने में मीडिया स्त्री का इस्तेमाल करती है।"[5]

बाजारवादी संस्कार में स्त्री वस्तु है, उसका अनुचित उपयोग किया जा रहा है। अधिक पढ़ी-लिखी और आधुनिक मानने वाली नारिया स्वयं परम्पराओं का विरोध करती है। और बाजार में स्वयं बढ़ आयी हैं। यह नारियों का विद्रोही रूप है। नारियां मानती हैं कि "नारियों का नारीपन किन चीजों में निहित है, यह बात कोई पुरुष नहीं, बल्कि नारियां ही तय करेंगी।"[6]

इस प्रकार उच्च शिक्षित, आधुनिक एवं कामकाजी नारियों की स्थिति, विकास, समस्याएँ हिन्दी साहित्य के विविध रूपों में मिलता है। समकालीन लेखिका कुसुम मेघवाल शिक्षा से स्त्रियों के विकास को रेखांकित करते हुए लिखती है-

"अपनी सहायता स्वयं की / तो बदल गयी / दीन हीन परिस्थितियाँ मेरी / गर्व है मुझको आज / स्वयं पर, पुरुषार्थ पर / जिसकी बदौलत पाया है मैंने/ शिक्षा, पैसा, वैभव / और सब कुछ।"[7]

स्त्रियां शिक्षा के बल पर अपने भाग्य को बदल रही है। दलित समाज की महिलाओं को आगे बढ़ने का एक मात्र रास्ता शिक्षा से होकर जाता है। इसी भाव को पूनम तुषामड़ अपनी कविता 'वो औरत' में लिखती है-

अज्ञानता का ग्रहण लगी / सुन्दर संसार से अनभिज्ञ औरत को / काश ज्ञान की निर्मल गंगा मिले / जिससे विदुशी बनकर बहे उसका मन।"[8]

हिन्दी साहित्य में नारी मुक्ति आन्दोलन एक संगठित रूप में सत्तर के दशक के बाद जन्म लेता है। इसका कारण स्त्री इस काल में अपने स्वत्व को पहचान पाती है। यह स्वत्व बोध नारी शिक्षा का परिणाम है। स्त्री और पुरुष दोनों समाज में समान रूप से अधिकारों के इकदार हैं पर स्त्री को हाशिए पर छोड़ रखा था। स्त्री ने शिक्षा प्राप्त कर अपने को सबल बनाया। उच्च शिक्षा प्राप्त नारियों ने अपनी स्वतंत्र नारी की जिजीविषा को चित्रित किया है-

"मैं किसी भी इष्ट के / अधीन बनकर / बह रही हूँ / मैं नदी हूँ। / मैं किसी नर की / बपौती भी नहीं हूँ / मैं खुद ही स्वामिनी / स्वतंत्र चिर हूँ / मैं नदी हूँ।"[9]

स्त्री हमेशा हमेशा पिता, पति व पुत्र के नियंत्रण में बताई गई है। आज स्त्री अपनी पहचान पिता, पति से नहीं, स्वयं के अस्तित्व के आधार पर देखना चाहती है। वह पुरुष प्रधान समाज को चुनौती देते हुए कहती है-

"मैं किसी की औरत नहीं हूं
मैं अपनी औरत हूं
अपना खाती हूं
मैं किसी की मार नहीं सहती
और मेरा कोई परमेश्वर नहीं।"[10]

पुरुष सत्तात्मक समाज में धीरे-धीरे स्त्री शक्ति और अधिकारों से वंचित हो गयी। पुरुष ने सर्वाधिकारी के रूप में अपने आपको प्रतिष्ठित किया। इस क्रम में उसने स्त्री अस्मिता पर चोट की। वह स्त्री पर अपना अंकुश बनाकर रखने लगा। कठोर अनुशासन लागू किया। स्त्री तो जननी है, पर जननी की कोख से जननी को जन्म नहीं लेने दिया जा रहा। जननी के प्रति श्रद्धा भाव ही लुप्त है। समाज की ऐसी मानसिकता रही है कि उसने सदा स्त्री अस्मिता से खेल खेला है। रंजना जायसवाल लिखती है-

"आज कक्षा में एक बच्चे ने मुझसे पूछा / छिन्नाल का अर्थ क्या है ? / प्रश्न के साथ ही हँस पड़ी पूरी कक्षा/ रातो रात सुपर हिट हुआ है यह शब्द / भोजपुरी ही नहीं, शहरी लोगों का भी / शब्द ज्ञान बढ़ा है।/ इक्कीसवीं सदी के / सभ्य, सुसंस्कृत पुरूष की / बर्बर अभिव्यक्ति से / जबकि बूंद मात्र है यह / सामंती मानसिकता के आकाश से टपकी / अभी बरसात बाकी है / रंडी, वेश्या, छत्तीसी का समानार्थी है यह शब्द / सोचती हूं / किसने गढ़ा होगा यह शब्द / स्त्री गरिमा के खिलाफ।"[11]

अब स्त्री को अपने उत्थान के लिए शिक्षा की डोर पकड़नी आवश्यक है। कवयित्री रजनी तिलक स्त्री शिक्षा के महत्त्व को समझाते हुए लिखती है-

"तू पढ़ महाभारत / न बन कुंती, न द्रौपदी / पढ़ मनुस्मृति / उलट महाभारत, पलट रामायण / पढ़ समाजशास्त्र, बन सावित्री / फहरा शिक्षा का परचम।"[12]

स्त्री को मुक्त करने में स्त्री शिक्षा ने प्रमुख भूमिका निभाई। पढ़ी-लिखी स्त्री ने शोषण के खिलाफ आवाज उठाई। स्त्री ने अपनी पहचान के लिए संघर्ष किया। रचनाओं में स्त्री के पक्ष में स्वर मुखरित हुआ स्त्री ने बंधनों को तोड़ डाला-

"परिंदा हूँ।
मुझे खुला आसमान चाहिए
न बरगला
पिंजरा तोड़ कर आई हूँ।"[13]

स्त्री ने अब ठान लिया है कि वह अब समाज में अनावश्यक दब कर नहीं रहेगी। यह महिला मुक्ति की आवाज है। वह नहीं टूटेगी, सुलगती रहेगी, रोती नहीं रहेगी। सदियों से भरा पड़ा आक्रोश का अब लावा फूटकर बाहर आ रहा है-

"जितना सताओगे, उतना उठूंगी
जितना दबाओगे, उतना उगूंगी
जितना बांधोगे, उतना बहूंगी
जितना बंद करोगे, उतना गाउंगी
जितना अपमान करोगे, उतनी निडर हो जाऊंगी
जितना सम्मान करोगे, उतनी निखर जाऊंगी।"[14]

स्त्री लेखन ने स्त्री अस्मिता को आवाज दी है। स्त्री रचनाओं ने स्त्रियों के पक्ष में आवाज उठाई है। सत्तर के बाद का लेखन स्त्री के आत्म पहचान और आत्मबल को उद्घोषित करने वाला है। प्रभा खेतान, ऊषा प्रियंवदा, गीतांजली श्री, नासिरा शर्मा, चित्रा मुद्गल, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा, कृष्णा सोबती आदि के रचनाओं में नारी का विद्रोही रूप दिखाई देता है। अन्याय व अत्याचार के खिलाफ विद्रोह का स्वर इनकी रचनाओं में हैं। कवयित्री पूनम तूषामड़ स्त्री के संघर्ष को अवाज देती है-

"मैंने छेड़ी है लड़ाई
उन तमाम असमर्थताओं के खिलाफ
जो मुझसे मेरे हिस्से का
सुख छीनकर ले जाती है
और बदले में मुँह चिढ़ाती है।"[15]

Conclusions

स्पष्ट है कि शिक्षा ने स्त्रियों को आत्मबल दिया। उच्च शिक्षा ने नारियों को शक्ति दी। पढ़ी-लिखी, ज्ञान सम्पन्न स्त्रियों ने न केवल अपने को शोषण से लड़ने के लिए तैयार किया, बल्कि उन्होंने दूसरी शोषित स्त्रियों को भी जगाया। उच्च शिक्षा ही वह हथियार है जिसके बल पर स्त्री अपने वजूद को पहचान कर समाज के अत्याचारों के खिलाफ लड़ सकती है। केवल शिक्षा ही नारी उत्थान के लिए पर्याप्त नहीं, बल्कि नारियों को उच्च शिक्षा से सम्पन्न होना होगा। स्त्री शिक्षा के माध्यम से स्त्री को अपनी शक्ति और दिशा दोनों पहचाननी है। पहले तो महानगरों से निकलकर दूर दराज के क्षेत्रों, गांवों, अंचलों में निवास करने वाली पिछड़ी स्त्रियों तक नई चेतना की बात पहुंचानी है। अपनी मुक्ति के साथ आने वाली अड़चनों, समाज व पुरुष को अपने अनुकूल बनाना है, दूसरी तरफ उसे स्वयं से भी अपनी लड़ाई लड़नी होगी उपभोक्तावादी-पश्चात्यवादी संस्कृति की लहर में बह जाने से अपने आप को रोकना होगा। स्वतंत्रता के नाम पर वह किसी भटकाव को न स्वीकारे। हिन्दी साहित्य की समकालीन कविता धारा में ऐसी उच्च शिक्षा प्राप्त नारियां अपने को, परिवार को व समाज को नयी दिशा देती दिखलाई देती हैं।

REFERENCES

1. डॉ. ललिता एन. राठौड़ - आधुनिकता : स्त्री विमर्श, समता प्रकाशन, कानपुर, 2014, पृष्ठ 19
2. राधा कुमार - स्त्री संघर्ष का इतिहास, पृष्ठ-14
3. डॉ. पवन कुमार पांडे स्त्री चिंतन और हिन्दी कविता, ईशा ज्ञानदीप, नई दिल्ली, 2017, पृष्ठ 71
4. निर्मला गर्ग - तू रोये जा रही है, यह हरा ग़लीचा, यात्री प्रकाशन, संस्करण 1992, पृष्ठ 56
5. प्रभा खेतान - भूमंडलीकरण, ब्रांड संस्कृति और राष्ट्र, पृष्ठ 232
6. सरला माहेश्वरी - नारी प्रश्न, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2007, पृष्ठ 15
7. रजनी तिलक (सं.) - समकालीन भारतीय दलित महिला लेखन, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015, पृष्ठ- 203
8. वही, पृष्ठ 233
9. वही, पृष्ठ 62
10. सविता सिंह - मैं किसकी औरत हूं, आउटलुक, साहित्य विशेषांक, जनवरी 2011, पृष्ठ 56
11. रंजना जायसवाल - एक बयान के बाद, आउटलुक (साहित्य विशेषांक), अंक जनवरी 2011, पृष्ठ 62
12. रजनी तिलक (सं.) - समकालीन भारतीय दलित महिला लेखन, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015, पृष्ठ 74
13. वही, पृष्ठ 81
14. प्रज्ञा रावत - औरत का बीज मंत्र, नारी लेखन और समकालीन समाज, क्लासिकल पब्लिशिंग, दिल्ली, 2012, पृष्ठ 192
15. रजनी तिलक (सं.) - समकालीन भारतीय दलित महिला लेखन, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015, पृष्ठ 66